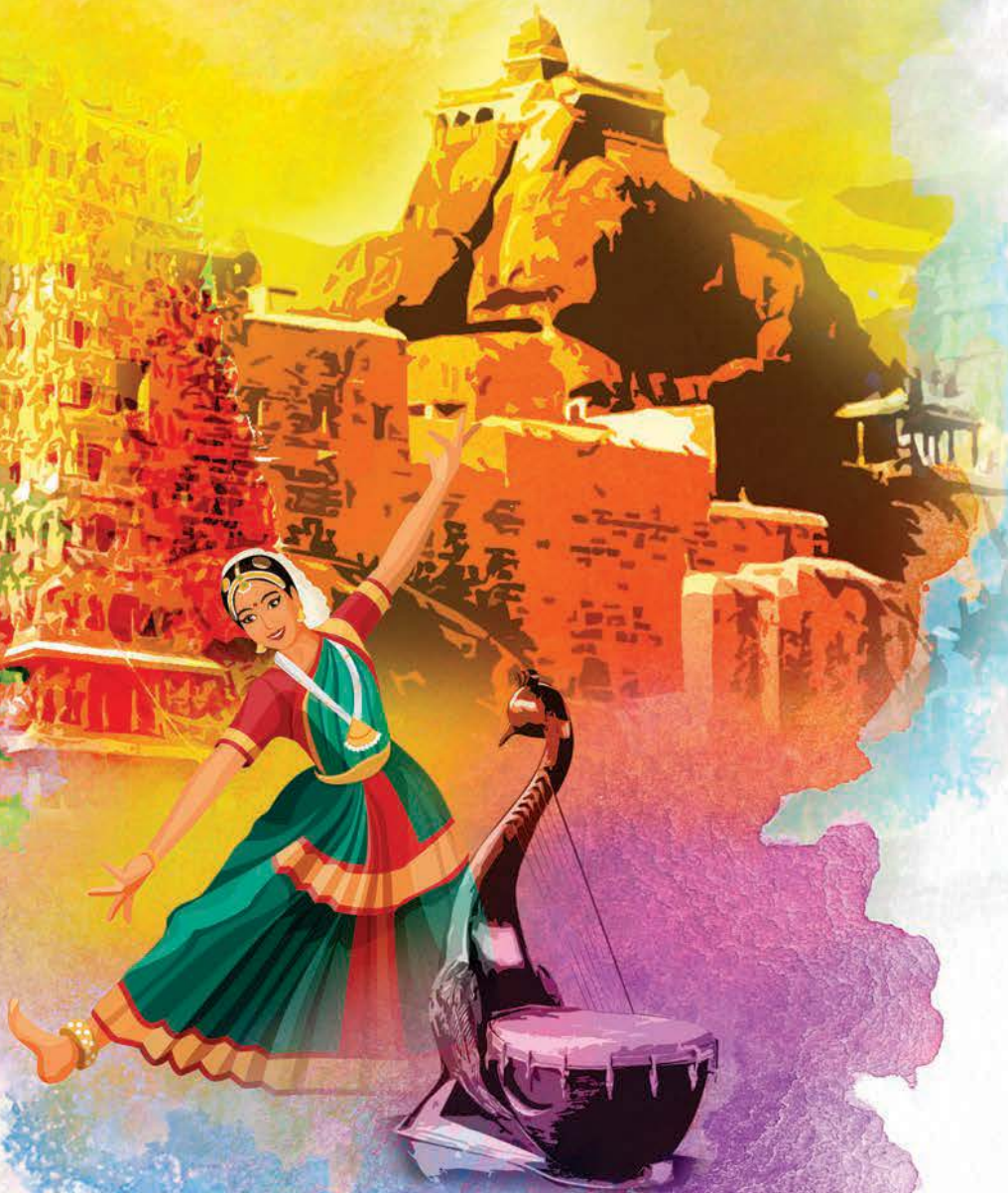


संगम

September 2021



पत्रिका समिति के सदस्य:

प्रो. अपूर्व खरे
प्रो. अभिषेक तोतावार
प्रो. बिपिन दीक्षित
श्री. आर. शंकरन
डॉ. के. इलवळगन
श्रीमती सजीला नाज़र

प्रतिलिप्यधिकार

भारतीय प्रबंधन संस्थान तिरुचिरापल्ली
सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक की किसी भी सामग्री, कविता, लेख, आलेख आदि को कॉपीराइट स्वामी की बिना लिखित अनुमति के किसी भी रूप में जैसे फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, जेरोग्राफी या अन्य किसी रूप में किसी भी सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इलेक्ट्रॉनिक या मेकैनिकल रूप में शामिल कर पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

मूल रूप से भारत में प्रकाशित
पुस्तक : संगम

© भारतीय प्रबंधन संस्थान तिरुचिरापल्ली
संस्करण : प्रथम
वर्ष : 2021

प्रकाशक: भारतीय प्रबंधन संस्थान तिरुचिरापल्ली

पुस्तक डिजाइन एवं मुद्रक:

सिग्नस एडवरटाइजिंग (इंडिया) प्रा. लि.
बंगाल इको इंटेलिजेंट पार्क, टावर-1, 13वां तल, यूनिट 29, ब्लॉक ईएम-3, सेक्टर-V, एसएलसी,
कोलकाता, पश्चिम बंगाल - 700091

विषय-सूची

■ सम्पादकीय	02
■ निदेशक का संदेश	03
■ मैं एक सफर हूँ	04
■ मिट्टी - मंज़िल	05
■ तमिलनाडु प्यारा भू-भाग	06
■ नया वर्ष	07
■ ये आकाश हमारा भी है	08
■ मैं	09
■ लड़की	10
■ रवानगी	12
■ गजल	15
■ लॉक डाउन	16
■ मन से संवाद	17
■ जागरुकता से ध्यान	18
■ हॉस्टल लाइफ़	19
■ संस्कृति एवं परम्पराएँ	20
■ इरादा	22
■ विडंबना	23
■ सामान्य बोलचाल के तमिल शब्द एवं वाक्य	25
■ ये दुनिया अगर मिल भी जाये तो क्या है?	27
■ कार्यस्थल तनाव के नए आयाम: कोविड के परिप्रेक्ष्य में	28
■ गुलदस्ता	31
■ 1. आया सावन हरा भरा, 2. अहं की चिंगारी	33
■ कशिश	34
■ ज़िन्दगी	35
■ चेतना	36
■ ईश्वरानुभूति	38
■ एक सेल्फी प्लीज	39

सम्पादकीय

प्रिय पाठकों,

संगम पत्रिका का प्रथम अंक आप तक पहुंचाते हुए हर्ष हो रहा है।

सर्वप्रथम शीर्षक के विषय में कुछ बातें: संगम शब्द के साथ मिलनसारिता और पवित्रता का भाव सहज ही जुड़ता चलता है। स्थानीय सन्दर्भ में संगम शीर्षक और भी प्रासंगिक हो जाता है। हमारे राज्य में स्थित कन्याकुमारी सागर एवं महासागर का अनूठा संगम स्थल है। एक अति प्रासंगिक तथ्य और भी है जो कि भौगोलिक ही नहीं अपितु सांस्कृतिक भी है। तिरुचि से कुछ ही दूर पिछली कुछ सहस्राब्दियों में महान कवियों एवं लेखकों का संगम काल तमिलनाडु ही नहीं, सम्पूर्ण भारत की महान सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक धरोहर हैं। तिरुक्कुरल संगम काल की ही अनमोल देन है।

हम आशा करते हैं कि यह पत्रिका भी अपने नाम को चरितार्थ करेगी और हमारे विविध भावों एवं विचारों का एक अनूठा संगम हो पायेगी। हमारी यह भी आशा है कि इस पत्रिका के लेख, कवितायें, स्तम्भ इत्यादि न केवल हमारी अभिव्यक्ति होंगे अपितु हमारे संस्थान और इसके समुदाय का एक दस्तावेज भी हो पाएंगे।

हम उन सभी महानुभावों को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने पत्रिका के लिए प्रविष्टियां भेजीं। पत्रिका के शीर्षक के लिए जिन्होंने हमें सुझाव दिए हम उनके आभारी हैं। हम विशेष रूप से शाश्वत जैन (पी.जी.पी.एम. 2020-22) को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने “संगम” शीर्षक सुझाया।

हम अपने निदेशक डा. पवन कुमार सिंह का आभार व्यक्त करते हैं कि उन्होंने इस पत्रिका का बीज बोया, उसे पोषित किया जो आज इस पत्रिका रूप में हम आपको सौंप रहे है। हम आशा करते हैं कि हमारी अनेकानेक कमियों, त्रुटियों के बावजूद आपका प्रेम एवं स्नेह पत्रिका को मिलेगा।

धन्यवाद एवं शुभकामनाएं,

सम्पादकीय टीम

प्रो. अपूर्व खरे

प्रो. अभिषेक तोतावार

प्रो. बिपिन दीक्षित

श्री आर शंकरन

निदेशक का संदेश

प्रिय साथियों, विद्यार्थियों, सहभागियों, तथा शुभचिंतकों !

भारतीय प्रबंधन संस्थान तिरुचिरापल्ली की प्रथम हिन्दी पत्रिका आपके हाथों में है। हमें प्रसन्नता है कि हमारा संस्थान एक दशक की यात्रा पूरा कर चुका है। संस्थान के प्रतीक चिह्न में एक मंत्र है - ज्ञानम् अनन्तम्। इसका अर्थ है - ज्ञान अनन्त है। चूँकि ज्ञान असीम है इसलिए ज्ञानी जितना अधिक जानता जाता है, उतना ही उसे पता लगने लगता है कि और कितना अधिक जानने को बाकी है। इसलिये विद्याशील का विनयशील हो जाना नैसर्गिक प्रक्रिया है - विद्या ददाति विनयम्।

तैत्तिरीय उपनिषद् के द्वितीय अध्याय के पहले अनुवाक के द्वितीय श्लोक में आया है -सत्यम् ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म। हमारे संस्थान के प्रतीक चिह्न का मंत्र यहीं से लिया गया है। इस औपनिषदिक उद्घोष मंत्र का शाब्दिक अर्थ है - ब्रह्म सत्य है, ब्रह्म परम ज्ञान है, ब्रह्म अनन्त है, और साथ ही साथ ब्रह्म तीनों एक साथ भी है।

वस्तुतः विद्या दो प्रकार की होती है - परा विद्या और अपरा विद्या। आत्मज्ञान अथवा ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी विद्या को परा विद्या कहते हैं और संसार में कुशलता के वर्द्धन के लिए जिस विद्या की आवश्यकता होती है उसे अपरा विद्या कहते हैं। भारतवर्ष के गुरुकुल परम्परा में जो विद्यालय अपरा विद्या के लिए निहित होते थे उनमें भी परा विद्या का कुछ अंश या कुछ संकेत विद्यार्थियों को अवश्य पढ़ाया जाता था क्योंकि आत्मपरिचय मानव जीवन का महती उद्देश्य है।

हिन्दी बहुत समृद्ध एवम् सरस भाषा है। अपनी मातृभाषा, राजभाषा, प्रांतीय भाषा, लोकभाषा के जानने से किसी अन्य भाषा को जानने समझने का मार्ग सुगमता से प्रशस्त होता है। भाषा की समझ व्यापक दृष्टिकोण का निर्माण करती है। बाल्यावस्था में ही सबको सिखाया जाता है कि देशाटन करने से व्यक्तित्व का विकास बहुआयामी होता है। भारतवर्ष की भूमि तो समृद्ध भाषाओं का निधिकोष है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी व निकोबार द्वीप तक, तथा द्वारका से लेकर असम व अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी छोर के गाँव तक कई अन्यान्य भाषाएँ बोली जाती हैं और इनमें कई भाषाओं के समृद्ध साहित्य तो उपलब्ध हैं ही। भारत को समझने के लिए एवं एक समेकित दृष्टिकोण के लिए अपनी भाषाओं के प्रति हमारी निष्ठा का बलवती होना ही वांछनीय है।

भारतीय प्रबंधन संस्थान तिरुचिरापल्ली परिवार ने इस हिन्दी पत्रिका को प्रकाशित करने में जो सार्थक प्रयास किया है उसके लिए साधुवाद! सुहृद पाठक हमारे प्रयास का आनन्द लें एवं और उत्कृष्टता के लिए अपने बहुमूल्य विचारों से हमें अवगत कराएँ।



डॉ. पवन कुमार सिंह

मैं एक सफ़र हूँ

मैं एक सफ़र हूँ
थोड़ा धुंधला सा हूँ

थोड़ा खफा सा हूँ
फिर भी
मैं एक सफ़र हूँ

मैं एक सफ़र हूँ
कभी थोड़ा कम हूँ
कभी आधे से थोड़ा ज़्यादा हूँ
फिर भी मैं एक सफ़र हूँ

मैं एक सफ़र हूँ
अभी भी हर व्यक्ति को मैं सुनता हूँ
फिर भी अपने ख्वाबों में उलझा सा रहता हूँ
मैं एक सफ़र हूँ

किसी का होना या न होना डर सा लगता है
फिर भी हंसकर खुद से मैं यह कहता हूँ
मैं एक सफ़र हूँ
मैं एक सफ़र हूँ!!



अशेष दास

भाई, अस्मिता दास, पी.जी.पी.एम. 2021-23

मिट्टी - मंज़िल

पाने को मंज़िल क्षितिज तक चलना पड़ता है,
धातु सा पिघलकर आकार में ढलना पड़ता है,

यू ही नहीं आता है परवाना शमां के पास,
खुद की आग में शमां को भी जलना पड़ता है।

मालूम है मुझे बहुत तेज़ चल लोगे अकेले तुम,
पर दूर तक चलना हो तो साथ चलना पड़ता है।

आसान नहीं, अजनबी से किसी का हो जाना,
आँखों से होकर रूह तक उतरना पड़ता है।

उड़ कर आसमान में नाप लेते है जो ज़हान को,
उन्हें भी कुदरत के टुकड़ों पर ही पलना पड़ता है।

ना कर गुरुर इन्सान तू खुद पर के तुम मिट्टी ही तो हो,
शहंशाह को भी आखिर मिट्टी में ही मिलना पड़ता है।



इन्ज़मामुल होदा

पी.जी.पी-एच.आर. 2020-22

तमिलनाडु प्यारा भू-भाग

चरण पखारे भारत का, तमिलनाडु में सागर
हतप्रभ होवें देख विविधता, पथिक यहाँ पर आकर

इस भूभाग में सब कुछ है, सागर समतल जंगल
हरित पहाड़ हैं पश्चिम में, करते सबका मंगल

इसके इतिहास को गूँथते, पल्लव पांड्य और चोल
लेमूरिया की संस्कृति, तमिल संगम के बोल

विविध व्यंजन सजते हैं, थाली कटोरियाँ कितनी
हल्के में भी चले काम, लें सोरु मोरु तन्नी

इस प्रदेश में चारों ओर, अनगिनत हैं मंदिर कितने
नभ में सूरज चाँद अलावे, तारे बिखरे जितने

उत्तर में है तिरुथनी, कार्तिक स्वामी का वास
यहीं पर जन्मे राधकृष्णन, फैलाए ज्ञान सुवास

दक्षिण में कन्याकुमारी, और रामेश्वर धाम
दर्शन को आते नर नारी, छोड़ जगत के काम

पश्चिम में मन को लुभाए, कोयम्बटूर और ऊटी
दूर दूर से आएँ सैलानी, लेकर लम्बी छुट्टी

पूरब में हैं कई क्षेत्र, पॉन्डिचेरी चिदाम्बरम
नटराज का स्थान, विष्णु बसते यहाँ स्वयम्

मध्य भाग तिरुवन्नमलाई, त्रिची और तंजौर
मदुराई है नगर अनोखा, मीनाक्षी मंदिर ठौर

तिरुचिरापल्ली बात निराली, कावेरी का संगम
श्रीरंगम में विष्णु बसे, और जलतत्त्व के लिंगम

विशिष्टाद्वैत यहीं पर पनपा, रामानुज यामुनाचार्य
जीवन के दर्शन दिये, पुण्य किये अति कार्य

तिरुचिरापल्ली में स्थापित, भारतीय प्रबंधन संस्थान
शिक्षण प्रशिक्षण शोध से अपने, शिक्षा देवें छान !!



डॉ. पवन कुमार सिंह
निदेशक

नया वर्ष

मैं तुम्हारे स्वागत की तैयारी भी नहीं कर पाया,
चारों तरफ सन्नाटा, बेबसी, लाचारी, खौफ का आलम,
मौत मुंह बांधे,
शहर के हर कोने, चौराहे से मौत की खबर,
लोग खामोश, मौन, लाचार, मायूस
अपनों के खोने का गम, श्रद्धांजलि नहीं दे पाने का दर्द,
किंकर्तव्यमूढ़ सरकार, असहाय पुलिस, निष्क्रिय विपक्ष,
धराशायी चिकित्सा सुविधा, सक्रिय चिकित्सक,
स्वप्रेरणा से मानवता की सेवा में जुटे समाज सेवक,
संपन्न किंतु चिकित्सा की विपन्नता के कारण,
शमशान में अपनी बारी का इंतजार करती लाशें,
ऐसे कठिन समय में तुम क्यों आ गये नववर्ष,
दुख, दर्द, निराशा की काली रात्रि जब समाप्त होगी,
तब नया सवेरा आएगा,
तब मानव मूल्यों की फिर से स्थापना होगी।



शाश्वत जैन
पी.जी.पी.एम. 2020-22

ये आकाश हमारा भी है

बचपन से हमें सपने देखना सिखाया जाता है। हम टीचर, डॉक्टर, गायक, पायलट, डांसर आदि बनने के तमाम सपने देखते हैं। बड़े होते-होते जैसे हम स्कूल जाने लगते हैं, हमारे इन्हीं सपनों का मज़ाक बनने लगता है। हमारे माँ बाप हमें यह सिखाने लगते हैं कि सपने ऐसे होने चाहिए जो पूरे हो सके और जिससे कोई कमाई भी हो सके।

हमें कई तरह की कलाओं का ज्ञान दिया जाता है। नाच, गान, पाककला आदि जैसी कलाओं में हमें निपुण बनाया जाता है पर अगर उन्हीं क्षेत्रों में बच्चे रुचि लेने लगे और उसे आजीवन अपनाना चाहे तब अक्सर खुद के घरवालों का साथ और आशीर्वाद नहीं मिल पाता। माता-पिता मान भी जाएँ तब उन्हें समाज के कई तानों का सामना करना पड़ता है।

आखिर क्यों हमें सपने देखने को कहा जाता है पर उन्हें पूरा करने का मौक़ा नहीं दिया जाता? हमारा देश इतनी तरक्की कर चुका है परंतु आज भी हमारा समाज हमें यह आज़ादी नहीं देता कि हम अपने सपने पूरे कर सकें। हमारा समाज ही हमें कदम-कदम पर रोकता है और हमें पीछे खींचने की कोशिश करता है परंतु अपने सपनों को पूरा करना सिर्फ़ हमारे हाथों में है।

धैर्य, एकाग्रता और निश्चय की दृढ़ता और मेहनत से हम अपने सभी सपनों को पूरा कर सकते हैं। हमें खुद पर और अपनी काबिलियत पर विश्वास रखते हुए अपने सपनों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए। हमें सपने देखना और उन सपनों के पीछे भागना कभी नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि इस धरती के खुले आसमान में हमारे सपनों के लिए भी जगह है और सपनों की ही उड़ान भर हम तमाम ऊँचाइयों तक पहुँच सकते हैं।



श्रेया पलसानी

पी.जी.पी.एम. 2021-23

मैं

खुद को खुदा में खोजता भी मैं
और खुद को ज़र्रा सोचता भी मैं
इंसानों में नायाब, बेनज़ीर भी मैं
और यूँ ही बिखरा मुंतशिर भी मैं
मेरी हसरतों से जूझता भी मैं
मेरी तोहमतों से टूटता भी मैं
मेरे खल्क में शामिल भी मैं
मेरे अक्स का कातिल भी मैं
मेरे अहम से बड़ा भी मैं
आज रास्ते पर खड़ा भी मैं
ऊपर से अशफ़ाक़ भी मैं
इरादों से नापाक भी मैं
इस दुनिया का मुसाफ़िर भी मैं
दुनियादारी का काफ़िर भी मैं
इस मायाजाल का अनुरागी भी मैं
सब छोड़ चला वो बैरागी भी मैं
सब का रचयिता इलाही भी मैं
वो कालरूप तबाही भी मैं
ईमान में बसता स्याही भी मैं
कौड़ियों में बिकता वाहवाही भी मैं
खज़ानों से बड़ी औकात भी मैं
और कौड़ी से कम की खैरात भी मैं

सड़कों पे गुस्साई भीड़ भी मैं
और ऑफिस में गायब रीढ़ भी मैं
फ़रक मिटाने की मांग भी मैं
थप्पड़ से पौरुष जताता स्वांग भी मैं
युगों-युगों का संस्कार भी मैं
संस्कार का ढाल लिए धिक्कार भी मैं

जब इतना दृढ़ तो कौन हूँ मैं?
अंदर है शोर, बाहर मौन हूँ मैं
क्या उत्तर दूँ इस प्रश्न का
इन सब ताज्जुब का
कि कौन हूँ मैं ?
इस वहशी, दरिन्दी दुनिया में
खुद से ही जलता मोम हूँ मैं
शराफ़त का एक खूबसूरत चोगा पहने

एक जाहिल , बद्ज़ात कौम हूँ मैं



सुमित बनर्जी

शोधार्थी

लड़की

आज यहाँ कल वहाँ हाहाकार हुआ....
आज इसका तो कल उसका बलात्कार हुआ...
छोड़ दो गिनना अब उँगलियों पे...
आज बाहर तो कल घर में शिकार हुआ...

क्यों मुँह छिपाके भागे सौंप के हवाले उनके...
क्यों न रुके बोला की मुझपे वार कर पहले उनके...
फिर क्यों अपनापन बाद में जताया...
जब साथ देना ही नहीं था तो क्यों तसल्ली देके सताया...

लड़की बन गयी ये गुनाह था मेरा...
दरिंदों को मौका मिला ये अन्याय था उसका...
हंस हंस के जब किया मेरा शोषण...
कर दिया तुमने तो आज देश का नाम रोशन...

सलाम है काबिलियत पे तुम्हारे...
जब शोषण कर सकते हो दिनदहाड़े हमारे...
क्या तुम्हारी माँ क्या तुम्हारी बहन अब सब पे हक है तुम्हारा....
हर रोज़ एक आता है तब भी मोमबत्तियों से ज्यादा न कुछ हो पाता है....

कुछ टी.वी. का तो कुछ फिल्मों का हाथ बताते हैं...
कुछ लड़कियों के पहनावे का दोष बताते हैं...
ये तो तरीके हैं अपनी गलतियों को छिपाने का वरना...
कहाँ लोग अपने को भेड़िये बताते है...

पिघलता है मोम और जलता है धागा ...
लड़की का बाप रहता है पूरी रात जागा...
कौन जाने फिर किसकी बेटी के लिये जलेगी मोमबती...
करे तो क्या करे वो बेचारा अभागा....

आज कहता हूँ मैं ये वचन...
न कभी होने दूंगा किसी का शोषण....
करता हूँ हिम्मत को तेरे नमन...
दूंगा साथ तेरा हर जनम...



विवेक लोया
पी.जी.पी.एम. 2021-23

रवानगी

“अरे माँ... रहने दो ना। खाने का सामान मत रखो यार। नहीं ले जा पाऊँगा ना। खाना मैं ट्रेन की पैट्री से ही खा लूँगा। बेकार का बोझ बढ़ेगा और डिब्बा कहाँ रखूँगा फिर?”, रजत अपना बैग जमाते हुए माँ से बोला।

“अरे बेटा, मैं जगह बना दूँगी बैग में। तू खा लेना। ये बाहर का तेल-मसाले वाले गंदे खाने से तो अच्छा ही होगा।”, अनामिका शर्मा, रजत की माँ, बोली।

माँ-बेटे की लड़ाई में बीच-बचाव करते हुए शर्मा जी ने अखबार से नज़रें हटाई और बोले “अच्छा सुनो। लड़का पहली बार जा रहा है। शांति से जाने दो। मन ठंडा रहेगा तो काम कर पायेगा।”

“आप तो ज़्यादा वकील ना बनो घर पर। अपनी वकालत कोर्ट तक ही रखो आप।”, पति को बेटे की तरफदारी करते देख अनामिका बोलीं।

शर्मा जी वापस अपने अखबार की तरफ मुड़ गए। उनको पता था की ये सब चलता ही रहेगा। अखबार पढ़ते-पढ़ते ही कुछ देर बाद उन्होंने रजत को बोला, “अरे देख तो लो कि ट्रेन सही समय पर है या डिले हो गयी है।”

रजत बैग जमाना छोड़ पलट कर पापा के तरफ देखता है। देखा की पापा अभी भी अपने अखबार में ही लगे हुए हैं। उसने अपने जेब से मोबाइल निकाल के उस पर श्रमजीवी एक्सप्रेस के आने का समय देखा। ऐप्प के हिसाब से गाड़ी समय पर थी। मन ही मन उसने सोचा की इसको आज ही ऑन-टाइम होना था। वो शर्मा जी की तरफ मुड़ के बोला, “हाँ पापा, समय पर ही है।” उधर से शर्मा जी की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई तो वो वापस बैग जमाने में लग गया।

“मैंने तो पहले ही कहा था की रात को ही बैग जमा लो।” शर्मा जी ने फिर से तीर छोड़ा। अब रजत झल्ला के बोला के “मुझे सुबह ही करना था। आपको कोई प्रॉब्लम?” शर्मा जी हंस पड़े इस बात पर। “कितनी बार कहा है की गुस्से पर काबू रखो। ऑफिस में कैसे काम करोगे अगर इतने शॉर्ट-टेम्पर्ड रहे तो?”

“पापा, अब आपका सुपुत्र सरकारी अफ़सर बन गया है। ये सब चुहल करके सरकारी काम में खलल डालने की गलती कर रहे हो।” रजत ने हँस के बोला।

“भाई, गलती तो हमने 25 साल पहले ही की थी। वही भुगत रहे हैं। उसके बाद से तो प्रायश्चित ही कर रहे हैं।” शर्मा जी ने रसोई की तरफ़ इशारा करते हुए जवाब दिया।

रसोई से मिसेज़ शर्मा ने बोला, “हाँ हाँ... गलती तो मैंने भी की थी। इतना अच्छा रिश्ता आया था मेरे लिए, लेकिन मेरे पल्ले पड़े आप। पता नहीं पापा को क्या दिखा आप में!”

शर्मा परिवार में तो ये नोक-झोंक रोज़ का था। जितना प्यार श्रीमान और श्रीमति जी को आपस में था, उससे कहीं ज़्यादा वो अपने बेटे रजत से करते थे। लेकिन आज की ये नोक-झोंक में जितनी खुशी थी, उतनी उदासी भी थी। रजत अपनी पढ़ाई पूरी करके आज घर छोड़ रहा था। दिल्ली में उसकी सरकारी नौकरी जो लग गयी थी।

रजत ने जल्दी में अपना बैग जमाया और चिल्लाया, “मम्मी नाश्ता दे दो। जा रहा हूँ। भूखे ही भेजेगी क्या?”

मिसेज़ शर्मा ने किचन से ही आवाज़ लगाया की, “लगा तो हुआ है टेबल पर।”

रजत ने जल्दी से नाश्ता किया और अपना लगेज और लैपटॉप बैग लेकर आगे बढ़ने लगा।

शर्मा जी बोले, “सब सामान रख लिया?”

“हाँ पापा।”

“सर्टिफिकेट, वगैरह?”

“हाँ, पापा।”

“जॉइनिंग लेटर?”

“हाँ, पा...”, रजत बोलते-बोलते रुका और अपने कमरे के तरफ भागा। शर्मा जी मुस्कुराते हुए बोले, “मैनेजर साहब, यहाँ है लेटर।”

रजत ने झेंपते हुए आगे बढ़ के पापा के हाथ से लेटर लिया। शर्मा जी बोले, “इतने भी बड़े नहीं हुए हो। बाप की ज़रूरत अभी भी है।”

रजत ने आँख उठा के अपने पापा के तरफ देखा। उनके चेहरे के भाव वो पढ़ नहीं पा रहा था। कहीं पर पहले ही मौके पर इतनी बड़ी सरकारी नौकरी लग जाने का गुरुर दिख रहा था, तो कहीं पर इकलौते बेटे को खुद से अलग करने का दुःख।

इन सब के बीच मिसेज़ शर्मा ने बेटे को दही-चीनी चखाया और माथा पर चूमा।

दो रिक्शा घर पर आये, एक पर अस्ताचल को अग्रसर अर्धेद्वंद्वी, और दूसरे पर उदयाचल बेटा अपने सामान के साथ चल पड़े स्टेशन की ओर।

3 नंबर प्लेटफार्म पर गाड़ी खड़ी थी। तीनों ट्रेन के पास पहुंचे; ए.सी.2 की बोगी में अपने सीट पे सामान रख के रजत वापस बोगी के गेट पे आया और माँ-बाप से बात करने लगा।

“आप रो मत मम्मी। हर चौथे महीने ट्रेन पकड़ के वापस आ जाऊँगा आपके पास।” मिसेज़ शर्मा मुस्कुरा पड़ी और बेटे को गले से लगा लिया।

मिस्टर शर्मा के होंठों पर भी हल्की मुस्कान आ गयी। उन्हें पता था की एक बार नौकरी का चक्कर पड़ गया तो कहाँ ये सब संभव होता है। कोई ना कोई इमरजेंसी वाला काम रहेगा ही। बेटा साल में एक बार भी घर आ गया तो काफ़ी है।

यही सब बात चल रही थी। माँ-बेटे के लाड़ भरी बातों के बीच, मिस्टर शर्मा अपने नसीहत के तीर छोड़ते जा रहे थे बीच-बीच में। इतने में ट्रेन ने सीटी दे दी। गाड़ी धीरे-धीरे लोहे की पटरी पर चलने लगी। “बाय मम्मी, बाय पापा” बोलकर रजत गाड़ी के दरवाज़े पर टिक के हाथ हिलाता रहा जब तक वो दोनों नज़रों से ओझल ना हो गए।

“चलिए भाग्यवान । अब बस हम दोनों को एक-दूसरे का ही सहारा है ।” ट्रेन ने जब स्टेशन को पूरी तरह से छोड़ दिया तब मिस्टर शर्मा बोले। स्टेशन के रिक्शा स्टैंड पे जा कर उन्होंने रिक्शा वाले को घर का पता दे के पूछा, “चलोगे?” रिक्शा वाले ने बोला, “50 रुपया लगेगा साहब।” मिस्टर शर्मा जानते थे की ये भाड़ा 10 रुपया ज़्यादा ही ले रहा है, लेकिन उन्होंने फिर भी हामी भर दी, “चलो ।” आज पता नहीं क्यों मोल-भाव करने का उनका मन नहीं किया ।

इधर रजत आ के अपने बर्थ पर बैठा और मोबाइल निकाल के फेसबुक पे अपडेट करने लगा। “ट्रैवेलिंग फ्रॉम पटना टू दिल्ली । फीलिंग एक्साइटेड, न्यू एडवेंचर अवेट्स।” इधर अपडेट किया, और उधर से दोस्तों ने लाइक करना शुरू किया । रजत ऐसे ही अब फेसबुक पर अपने दाहिने अंगूठे से सब पोस्ट को ऊपर करने लगा । अचानक उसे मोबाइल कुछ धुंधला दिखना शुरू हुआ । लाइक्स के बौछार के त्वरित सुख के बीच उसके दिल में अब इस बात का एहसास होने लगा की वो घर से दूर जा रहा है। शहर से दूर जा रहा है। अपने माँ-बाप से दूर जा रहा है ।

वादा तो किया था हर चौथे महीने आने का लेकिन क्या वो कर पायेगा ये सोचने लगा । फिर उसने संकल्प लिया की नहीं वो किसी भी कीमत पर घर आएगा और नियमित रूप से आता रहेगा । इसी उधेड़बुन में खोया-खोया वो खिड़की के बहार अपने शहर को पीछे छूटते हुए देखने लगा ।

उधर रिक्शा पर बैठे मिसेज़ शर्मा अपने पल्लू के कोने से आँखों से बहते हुए अश्रु धारा को रोकने की विफल कोशिश कर रही थी और मिस्टर शर्मा शून्य में देख रहे थे । उनके चेहरे के भाव अभी भी उनके अंदर चलते हुए विचारों के बवंडर को सामने नहीं आने दे रहे थे ।

घर छूट रहा है । गाँव छूट रहे हैं । कस्बे छूट रहे हैं । शहर छूट रहा है। कभी-कभी तो देश भी छूट रहे हैं। लोग छूट रहे हैं । माँ-बाप छूट रहे हैं और मिल क्या रहा है? किसी को नहीं पता । सब दौड़ रहे हैं। एक बेहतर कल के पीछे। पता नहीं वो बेहतर कल है भी या नहीं । लेकिन सब दौड़ रहे हैं। इस दौड़ में आज रजत भी शामिल हो गया है । इस दौड़ में आस-पास क्या चल रहा इसकी तस्वीर भी धुंधली है। दिखता ही नहीं की साथ में क्या था जो छोड़ दिया। अब ये तो लाज़िमी है कि तेज़ रफ्तार में आस-पास की तस्वीर धुंधली हो ही जाती है।

कभी-कभी लगता है क्यों दौड़ना इतना? थोड़ा ठहरो । सांस लो । अपने आस-पास देखो । जीवन का आनंद लो । दौड़ते हुए तो सांस नहीं ले सकते, आनंद क्या खाक लगे । इस रोज़मर्रा की रेस में थोड़ा धीरे चल के देखो । शायद तस्वीर फिर साफ़ दिखने लगे ।



सुमित बनर्जी
शोधार्थी

गजल

तेरी हिज़्रा, तेरे इंतज़ार का सबब
कि हमने मशालों का लौ बुझा दिया

तेरे चराग़ से थी बज़्म¹ को लौ मयस्सर
तुम ना आये तो हमने सुनसान बना दिया

हमें भी था मोहब्बत पे फ़क्र
तेरे इश्क़- ए-मरासिम² ने सारे भरम भुला दिया

कुछ हकीकत कुछ ख़्वाब थे मिले हुए
बरसात की याद का खुमार रहने दिया

हम तो इश्क़ से हो रहे थे रू-ब-रू
इश्क़ ने रूह को नाशाद³ बना दिया

1 - महफ़िल | 2 - रस्म, कायदा | 3 - अवसाद, उदास



गौतम भास्कर
शोधार्थी

लॉक डाउन

ऊँचे निवासों में, शीशे-बंद घरों में
सड़क पर बिलखने की आवाज़ नहीं आती।

घर से दूर मज़दूर, स्लम, 'ग्रोथ-इंजन' के मूक निवासी,
जेठ के महीनों में मीलों पैदल चलने की बदहवासी,

गरीब के मसीहों, हाकिमों की गैरत-ए-बेलिबासी,
तटस्थ प्रेक्षक की विषादपूर्ण उदासीनता,
ठप पटरी राजमार्ग को नापती, मरती जनता,

बच्चों का रुदन, उद्विग्न साज़,
नवभारत की असीम ऊंचाइयों ने देखा आज।



गौतम भास्कर
शोधार्थी

मन से संवाद

हमारा मन एक ऐसा मंदिर है जहाँ आत्मारूपी ईश्वर निवास करते हैं। मन की शक्ति को सभी शक्तियों से ऊपर माना गया है। अपना सारा विचार, सारी भावनाएँ मन के अंदर चलती रहती हैं। दावे कितने भी कर लिए जायें किन्तु संसार में कोई भी संबंध ऐसा नहीं है जिसे अपना कहा जा सके। सारे रिश्ते स्वार्थवश हैं। एक मनुष्य का मन ही है जो उसकी समस्त भावनाओं और विचारों को समझ सकता है। मन को शब्दों की आवश्यकता भी नहीं होती है। कोई विचार कहाँ से आया और कहाँ गया यह सिर्फ स्वयं का मन ही जानता है। जब हमारे मन के अंदर विचारों का मंथन चलता है तब हमारा यह मन हमेशा हमें सही दिशा दिखाता है।

मन को परमात्मा का सूक्ष्म रूप माना जाता है। मन की शक्ति को पहचानना ईश्वर को पहचानना है। मन से संवाद करने के लिए पहले उसे सारे विकारों और मोह-माया के अंधेरे से बाहर लाना होगा। मन में स्थित ईश्वर के दर्शन के लिए मन का निर्मल होना आवश्यक है। मनुष्य जब अपने मन के निकट होता है तब सारी सृष्टि से निकटता बन जाती है। जब इंसान सारी सृष्टि के करीब होता है तब ही वह अपने आप को ईश्वर के बिलकुल करीब पाता है। यह ही सत्य है, यह ही ध्यान है।

दुनिया पर किया गया भरोसा तो टूट सकता है लेकिन दुनिया के मालिक पर किया गया विश्वास कभी नहीं टूटता। सिर्फ ईश्वर ही सत्य हैं, शेष सब सपना। वो परमात्मा हमारे अंदर हैं, हम सब के अंदर हैं। आत्मा ही परमात्मा है और वो हम हैं।



पूनम सिंह
पत्नी, डॉ. पवन कुमार सिंह, निदेशक

जागरुकता से ध्यान

महात्मा बुद्ध की ध्यान की प्रक्रिया का सारी दुनिया में प्रचार हुआ। उनकी प्रक्रिया को अगर हम समझें तो जागरुकता ध्यान का मूलमंत्र मालूम होता है। जागरुकता ध्यान की प्रक्रिया को बड़ा आसान और सरल बना देता है। हमारे मन में जो भी विचार उत्पन्न होते हैं, चाहे वह अच्छे हों या बुरे, महात्मा बुद्ध कहते हैं कि ध्यान में यह देखो और इसके प्रति जागरुक बने रहो कि इन विचारों से हमारे शरीर एवं मस्तिष्क में किस प्रकार का अहसास या सनसनी उत्पन्न होता है।

यह जागरुकता एक स्वतंत्र भाव है जो सुख-दुख या इस धरती पर होनेवाली किसी भी क्रिया से परे है। जैसा हो रहा है उसे वैसे ही देख पाना जागरुकता है। निरंतर अभ्यास से यह जागरुकता हमारी मस्तिष्क की एकाग्रता को बढ़ाता है और जब हम एकाग्र हो जाते हैं तब ध्यान की प्रक्रिया सहसा अपने आप शुरू हो जाती है। जो ध्यान का अभ्यास करते हैं वह यह जानने लगते हैं कि एकाग्रता हमें शांति और सुख का भाव प्रदान करता है। मन एकाग्र हुआ नहीं कि शरीर में सुख की लहर उमड़ पड़ती है। इससे यह मालूम होता है कि सुख और शांति का सीधा सम्बन्ध जागरुकता से है। जब सिर्फ जागरुक होने मात्र से ही इन्सान सुख को पा सकता है तब हम क्यों इसे बाहर इस दुनियाँ में ढूँढने में लगे हुए हैं! वह बाहर किसी वस्तु या इन्सान में नहीं बल्कि अपने अंदर ही हमेशा से स्थित है।

इस संसार का नियम यह है कि किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए अभ्यास की जरूरत है और यदि आंतरिक सुख और शांति इन्सान की चाह है तो अभ्यास और मेहनत का नियम यहाँ भी लागू हो जाता है। मेहनत यहाँ अपने भीतर जाकर जागरुक बने रहने की है। यही तप भी कहलाता है। इस तप को भले ही साधने में कुछ समय लग जाए पर फल हमें यह जरूर प्रदान करता है। हमेशा सुखी और समभाव में बने रहना कोई छोटी बात नहीं है। यह जीवन का सबसे बड़ा और एक कठिन लक्ष्य है। लक्ष्य जितना कठिन हो, मेहनत उतनी ज्यादा लगती है। इसलिए जागरुकता से ध्यान का अभ्यास जो व्यक्ति रोज पूरी लगन एवं श्रद्धा से करता है, उसे अपनी मंजिल निश्चित ही मिलती है।

कितनी अजीब बात है न यह कि सुख हमारे अन्दर ही बैठा है, वह हमारा ही अंश है और उसे पाने के लिए भी अभ्यास करना पड़ रहा है! इससे तो यही जान पड़ता है कि हम अपने से ही दूर चले आए हैं। ध्यान और कुछ नहीं, बस अपनी ओर आने की क्रिया है। अभ्यास की जरूरत इसलिए है क्योंकि शायद हम अपने से कुछ ज्यादा ही दूर निकल गए हैं। जागरुकता से ध्यान का मार्ग बुद्ध का मार्ग है। आप कोई और भी मार्ग चुन सकते हैं, परन्तु विचारणीय एक ही है - निरंतर अभ्यास।



वैभव सिंह

पुत्र, डॉ. पवन कुमार सिंह, निदेशक

हॉस्टल लाइफ़

हॉस्टल लाइफ़ है बड़ी मस्त
छुट्टी के दिन रहते हैं सुस्त।
सुबह जल्दी है जागना
फिर zoom प्लेटफार्म पे लॉगिन है करना।
जाना वो लेक्चर में 1 मिनट बाद
पढ़ते तो हैं लेकिन रहता है कुछ ही याद।
रात को दो-तीन बजे तक जागना
फिर सुन्दर-सुन्दर सपनों में खोना।
मेस की गुटरगूँ भूल नहीं सकता
तुम्हारे बिन यारों रह नहीं सकता।
करना वो पढ़ाकू दोस्तों को रातो में तंग
हॉस्टल में पढ़ाई, लेकिन मस्ती भी संग।
वो देर रात गयी मैग्गी बनाना
दोस्तों को बेवजह कॉफ़ी है पिलाना।
रूम में सजती है यारों की महफ़िल
जिनके साथ हम जाते है घुल मिल।
रूम की सफ़ाई, साथ ही साथ पढ़ाई
मेस में जाते ही घर की याद सतायी।

लेना वो दोस्तों से पढ़ाई में मदद
दोस्त कोई रूठे तो होता है दर्द।
रूम में बैठके BGMI है खेलना
चिकन डिनर के पीछे संकट है झेलना।
भेजकर SMS दोस्त की बैंड बजाना
रूठे हुए दोस्त को फिर SMS से ही मानना।
देखना वो रात को लैम्पी में फिल्में
गुनगुनाना रात को कॉरिडोर में नगमें
हॉस्टल की पार्टी भूली नहीं जाएगी
सच में यारों तुम्हारी बड़ी याद आएगी।
करता हूँ रूब से एक ही दुआ
हम ना हो यारों कभी भी जुदा।



कुशल मोसाहारी

पी.जी.पी.एम. 2020-22

संस्कृति एवं परम्पराएँ

एक स्थानिक परिप्रेक्ष्य

परंपरा की शब्दकोशीय परिभाषा के अनुसार यह एक प्राथगत विचार प्रारूप, कार्य या व्यवहार है जो विरासत द्वारा स्थापित और प्राप्त है। जब हम परम्पराओं को सामाजिक दायरे की दृष्टि से देखते हैं तो पाते हैं कि यह धार्मिक भावनाओं से परे जाकर समाज को प्रभावित करती है। परंपरा के प्रति यह दृष्टिकोण हमें संगठनात्मक जीवन में भी दृष्टिगत होता है। परंपराएं संगठनात्मक संस्कृति का प्रगटीकरण हैं, परन्तु उनके निर्माण की प्रक्रिया को एक नए परिदृश्य में देखे जाने की आवश्यकता है और यह लेख इसी उद्देश्य की पूर्ति का एक प्रयास है।

संगठनात्मक संदर्भ में परम्पराएं संगठनात्मक संस्कृति का उपोत्पाद माना जा सकता है। संगठनात्मक संस्कृति को “मूल्यों, अपेक्षाओं और प्रथाओं के संग्रह” के रूप में परिभाषित किया गया है जो किसी संगठन के सदस्यों के कार्यों को मार्गदर्शन और दिशा प्रदान करते हैं। हमारी वर्तमान समझ में यह माना जाता है कि विशिष्ट संगठनात्मक परम्पराएँ एवं संस्कृतियों का विकास संगठन के अंदर ही होता है एवं समय के साथ इसका प्रसार होता है। संगठनात्मक संस्कृति को “जादुई मिश्रण” के रूप में माना जा सकता है, जिसने वॉल-मार्ट और साउथवेस्ट एयरलाइंस जैसी संगठनों में अनेक अवरोध के होने पर भी इन कंपनियों को अद्भुत सफलता दिलाई है। समय के साथ, संस्कृति एक फर्म और उसकी सफलता की संभावनाओं के मूल्यांकन में प्रमुख निर्धारक बन गई है। संगठनात्मक संस्कृति और इसके विकासात्मक पहलुओं पर कई शोध हुए हैं। साथ ही, शोधकर्ताओं ने अन्य कारकों जैसे कर्मचारी शिष्टाचार, नागरिकता व्यवहार, दक्षता, प्रतिबद्धता और संगठनात्मक प्रदर्शन पर इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव को देखा है। संस्कृति एक व्यापक अवधारणा है जो कि किसी संगठन के प्रत्येक कर्मचारी को प्रभावित करती है इसलिए इसका सूक्ष्म, मध्य और स्थूल स्तर पर प्रभाव पड़ता है। क्योंकि संस्कृति क्रियाओं का मार्गदर्शन करती है, और परंपराएँ फर्म का और उसके अंदर का व्यवहार और क्रियाएँ हैं, जिसके फलस्वरूप हम यह तय कर पाते हैं कि संस्कृति को कैसे परिभाषित किया जाये। यह देखते हुए कि ये परंपराएँ फर्म के संस्थापकों और नेतृत्व द्वारा बनाई जाती हैं जो कि आगे चल कर फर्म के कर्मचारियों में स्थानांतरित कर दी जाती हैं। यह दृष्टिकोण काफी हद तक कर्मचारी परिप्रेक्ष्य की उपेक्षा करता है। किन्तु यहाँ यह समझना उपयुक्त है कि फर्म के स्थायी भविष्य के लिए, कर्मचारी परिप्रेक्ष्य समान रूप से महत्वपूर्ण होता है।

संस्कृति स्थान विशिष्ट होती है और संस्कृति और परंपरा, जो कि एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं, को संगठनों के भूमिगत अर्थ से बाहर सामाजिक परिवेश में लाने की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में हम इस समझ को आगे बढ़ाते हैं और लेफेब्रे (1991) द्वारा प्रतिपादित स्थानिक त्रय तंत्र का प्रयोग करते हैं जिसमें स्थानिक अव्ययों और विशेष रूप से स्थानिक अभ्यास आयाम का प्रयोग किया गया है। स्थानिक अभ्यास तत्व वह है जो ‘उत्पादन और पुनरुत्पादन को समाहित करता है, एवं विशेष स्थानों और प्रत्येक सामाजिक गठन के स्थानिक विन्यास विशेषताओं को जोड़ता है’ (लेफेब्रे, 1991, पृष्ठ 33)। हम स्वीकार करते हैं कि सामान्य रूप से स्थानिक त्रिभुज तंत्र को व्यक्तिगत तत्वों के बजाय संपूर्णता में माना जाता है, लेकिन फिर भी हम रिक्त स्थान के प्रतिनिधित्व और स्थान की रिक्तता के प्रतिनिधित्व को अनदेखा करते हुए, स्थानिक अभ्यास पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। संगठन हमेशा अपने कर्मचारियों को संगठन से जुड़ाव और जुड़ाव बनाने के तरीकों की तलाश में रहते हैं और

इस तरह से प्रतिबद्ध बढ़ने का प्रयास करते हैं। इस उद्देश्य के साथ, संगठनात्मक परंपराओं के लिए मौजूदा संस्कृति से परे एक परिप्रेक्ष्य रखना महत्वपूर्ण है।

व्यक्तिगत स्तर पर प्रत्येक कर्मचारी के अपने पारंपरिक मूल्य और विश्वास होते हैं जो उसके मन-मस्तिष्क में गहराई से निहित होते हैं। ये परंपराएँ या तो उनके व्यक्तिगत स्थानों जैसे घर या फिर बड़ी सामाजिक व्यवस्थाओं, जैसे कि धार्मिक और सामाजिक संस्थाएँ, या दोनों के अंतर्क्रिया से आ सकती हैं। यद्यपि संगठनों के लिए प्रत्येक परंपरा पर विचार करना चुनौतीपूर्ण है, जो उसके कर्मचारी साथ लाते हैं, फिर भी इन परंपराओं पर विचार करना महत्वपूर्ण है। उन परंपराओं को सामने लाने के लिए एक अनुभवसिद्ध नियम प्रयुक्त हो सकता है जो उस स्थान के सामाजिक ताने-बाने की पुष्टि करती हो जिसमें संगठन स्थित है। यह फर्म की उच्च स्तर की अंतःस्थापितता को सुनिश्चित करेगा, जो कर्मचारी व्यवहार और प्रदर्शन के मामले में अनुकूल एवं घनात्मक प्रतिफल ला सकता है।

कर्मचारियों में उच्च स्तर की प्रतिबद्धता और लगाव लाने के लिए यह आवश्यक है कि संगठन अपने बाहरी परिवेश के आधार पर अपनी तात्कालिक सामाजिक संसार से प्राप्त परंपराओं में अच्छी तरह से अंतर्निहित हो। परंपराओं के एक सरिखण का संगठन के भीतर किए गए कार्यों और निर्णयों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, और कर्मचारियों के मन - मस्तिष्क में परंपरा के बारे में गहरे बैठे विश्वासों के कारण उनकी स्वीकार्यता में वृद्धि संभव है। कर्मचारियों के सामाजिक परिवेश में संगठन की परंपराओं को और अधिक अंतर्निहित बनाने की आवश्यकता है। यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि स्थान विचार के माध्यम से व्यक्ति अपने - आप में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है जो कि उसके कार्यों एवं व्यवहार से परिलक्षित होता है। संगठन के परिप्रेक्ष्य में भी इसी प्रक्रिया का पालन होता है जो कि कर्मचारियों के कार्यप्रणाली, उनकी कार्य दक्षता, एवं उनके कार्य प्रदर्शन पर अपना उचित प्रभाव डालता है। अंततः दक्षता और बेहतर कार्यप्रणाली को बढ़ावा देने वाले विभिन्न व्यवहार परिवर्तनों की उचित संगठनात्मक समझ आवश्यक प्रतीत होती है जिसके माध्यम से प्रदर्शन में सुधार किया जा सकता है। संस्कृति को स्थानिक अभ्यास से जोड़कर संगठन नेतृत्व अपने कर्मचारियों पर घनात्मक प्रभाव डाल सकता है जो कि उस संगठन के लाभ में वृद्धि करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।



पारिजात लंके, शोधार्थी
प्रो. बी. के. उपाध्याय, आई.आई.एफ.एम., भोपाल
प्रो. अभिषेक तोतावार, संकाय सदस्य

इरादा

आज
अकेले में
इस अजीब से सन्नाटे में
एक बेरुखा सा सवाल, खुद से ही पूछता हूँ मैं

क्यूँ??
आज तक अपना सर झुकाए चलता रहा मैं
जब किसी ने प्यार से पुकारा,
तो दो पल उसी के पास रुक गया
जब किसी ने नज़रे फिरायी,
तो दिल में अजीब सा दर्द हुआ
मगर फिर,
किसी और रास्ते पर सर झुकाए चलता रहा मैं

जब जिंदगी की थी शुरु,
तो मंजिलों का कहाँ पता था ?
जब मंजिलें बतायी किसी ने,
तो उनके रास्तों का कहाँ पता था ?
जब रास्ते भी सुझाये किसी ने,
तो उनके पथरों का कहाँ पता था ?
शायद,
इसीलिए हर रास्ते पर सर झुकाए चलता रहा मैं

मगर, आज !
जब अपनी मंजिल को देख लिया मैंने
उस तक जाते रास्ते को जान लिया मैंने,
तो फिर अब पथरों के डर से,
अब नहीं घबराऊँगा,
अगर घबरा भी गया,
तो अपना सर नहीं झुकाऊँगा

एक और बात,
जब दिल मेरा है,
तो धड़कनें भी मेरी हैं
जिसने सपने देखे,
वो आंखे भी मेरी है
तो फिर इन रास्तों पर आगे
चलना भी मुझे पड़ेगा
उन पथरों को हटाने के लिए,
झुकना भी मुझे पड़ेगा

शायद
इसी फ़र्क को,
समझने के लिए,
आज तक!!! अपना सर झुकाए चलता रहा मैं

विडंबना

एक चैनल साहस की कहानी प्रसारित कर रहा था
जहां जवान जवानों ने दी जान
देश के लिए, अपने बच्चों और पत्नी को छोड़कर
आंसुओं, यादों और गर्वित दरिद्रता में।
वे चले गए, उनके दिल में गहरे
उनकी तनावपूर्ण आंखों में आंसू छलक रहे हैं।
लड़के ने कहा, 'मैं सेना में शामिल हो जाऊँगा'
बेटी ने कहा 'सेना के जवान से शादी करूँगी'
माता-पिता, चौंक गए, मुड़ गए और फटकार लगाई
'कंप्यूटर पढ़ो और अमेरिका जाओ'।
विडंबना वहाँ सौ बार मरी।

एक और चैनल, उत्कृष्ट स्पष्टता में
स्लो मोशन में एक एपिसोड दिखा रहा था।
भोजन के लिए एक बाघ हिरण का पीछा कर रहा था
और हिरण खुद को बचाने के लिए दौड़ रहा था।
कई दर्जन मिनट तक पीछा जारी रहा
सोफ़े में हर दिल जोर से धड़क रहा है
हर मन हिरण के लिए प्रार्थना करता है
और जब हिरण भाग गया,
सभी ने राहत की सांस ली।
भूखी भीड़ खाने की मेज पर चली गई,
पका हुआ चिकन और मटन देखकर रोमांचित हो गया।
विडंबना वहाँ सौ बार मरी।



इस खबर पर चल रही थी खास रिपोर्ट:
एक झुग्गी बस्ती में घोर गरीबी में लोगों की।
फटेहाल पुरुष और महिलाएं, बच्चे नग्न
उनकी पसलियों में दिखाई देने वाले भोजन की कमी
वाकई दिल दहला देने वाला दृश्य।
दया और अपराधबोध से गला घोट दिया।
नौकरानी जा रही थी, दरवाजे पर रुकी थी
उसने भुगतान से अग्रिम मांगा
कल पैदा हुई अपनी पोती की देखभाल करने के लिए।
घर की औरत अपने लुक में सख्त थी
वह और कठोर बोला, नौकरानी जल्दी से चली गई।
विडंबना सौ बार मर गई।

धनी बूढ़े ने अंतिम सांस ली है,
परिजन, एक बड़ी भीड़, जल्दी से इकट्ठी हो जाती है
वे उसे स्वर्ग भेजने के लिए फुसफुसाए।
अनुष्ठान खत्म, नश्वर अवशेष
रिवाज के अनुसार आग की लपटों को खिलाया गया।
पितृसत्ता का अंगारा अभी भी उबल रहा है
वे सभी घर पर वापस इकट्ठे हो गए
अधिवक्ता के साथ आनन-फानन में तलब किया।
'उसके पास क्या बचा है, मेरा हिस्सा क्या है?'
हर जोड़ी के होठों पर सिर्फ सवाल।
विडंबना वहाँ सौ बार मुस्कुराई।



आर. शंकरन

वित्तीय लेखा परीक्षक और मुख्य लेखा अधिकारी

सामान्य बोलचाल के तमिल शब्द एवं वाक्य

Sl. No.	HINDI	ENGLISH	TAMIL	TAMIL-HINDI
1.	पानी	Water	தண்ணீர்	तण्णीर
2.	फल	Fruit	பழம்	पलम
3.	सेब	Apple	ஆப்பிள்	आप्पिल
4.	केला	Banana	வாழைப் பழம்	वालैप्पलम
5.	मूंगफली	Groundnut	வேர்க்கடலை	वेर्कटलै
6.	सांप	Snake	பாம்பு	पाम्पु
7.	कुत्ता	Dog	நாய்	नाय
8.	मोर	Peacock	மயில்	मयिल
9.	गिलहरी	Squirrel	அணில்	अणील
10.	आम	Mango	மாங்காய்	मान्काय
11.	पिता	Father	அப்பா	अप्पा
12.	माता	Mother	அம்மா	अम्मा
13.	दोस्त	Friend	நண்பன்	नण्बन
14.	लड़का	Boy	பையன்	पैयन
15.	लड़की	Girl	பெண்	पेण
16.	जल्दी	Fast / quickly	சீக்கிரம்	शीक्किरम
17.	जी, जी हाँ	Sir / Madam Yes	ஐயா / அம்மா / மேடம்	ऐया / अम्मा / मेडम
18.	जी हाँ	Yes, sir	ஆமாம் / ஆமாங்க	आमाम / आमाना
19.	नहीं	No, Sir	இல்லை / இல்லைங்க	इल्लै / इल्लैना
20.	नमस्ते / नमस्कार	Hello/ Good Morning !	வணக்கம்	वणक्कम
21.	अन्दर आइये	Please sitdown	உள்ளே வாங்க	उल्ले वाना
22.	धन्यवाद	Thanks	நன்றி	नन् रि
23.	बैठिये धन्यवाद	Please sit down	உட்காருங்க	उट्कारुना
24.	कहिये	Yes, tell me	சொல்லுங்க	सोल्लुन्क /
25.	मैं ठीक हूँ	I am fine	நான் நல்லா இருக்கேன்	नान नल्ला इरुक्केन
26.	आप कैसे हैं?	How are you ?	எப்படி இருக்கீங்க	एप्पटि इरुक्कीना
27.	आइये	Welcome please come in	வாங்க	वाना
28.	अच्छा / ठीक है	Oh !Good/ Well / Nice	நல்லது / சரி	नल्लथु / सरि

Sl. No.	HINDI	ENGLISH	TAMIL	TAMIL-HINDI
29.	एक छोटा सा काम है, इसलिये आया	There is a small job, so I came	ஒரு சின்ன வேலை, அதுக்காக வந்தேன்	ओरु चिन्न वेलै इरुक्कु, अतनाल वन्देन
30.	खाने में क्या है?	What is there for lunch	சாப்பிட என்ன இருக்கு	साप्पिड एन्न इरुक्कु
31.	दो इडली लाइये	Get me 2 idlis	2 இட்லி கொண்டு வாங்க	रेण्डु इडली कोण्टु वाना
32.	क्या यह गाड़ी स्टेशन जायेगी?	Will this bus go to station	இந்த பஸ் ஸ்டேஷன் போகுமா	इन्द वण्डि स्टेशन पोगुमा
33.	सौ रूपए का छुट्टा है क्या?	Do you have change for 100 rupees	100 ரூபாக்கு சில்லரை இருக்கா	नूरु रूपाय्क्कु सिल्लरै इरुक्का
34.	मैं एक विद्यार्थी हूँ	I am a student	நான் ஒரு மாணவன்	नान ओरु माणवन
35.	दुकान कब खुलेगी?	When will the shop open	கடை எப்போது திறக்கும்	कतै एप्प तुरक्कुम
36.	मैं आई.आई.एम. में पढ़ता हूँ	I study at IIM	நான் IIM இல் படிக்கிறேன்	नान आइ आइ एम मिल पडिक्किरेन
37.	मेरा तबीयत खराब है	I am not well	எனக்கு உடல் சரியில்லை	एनक्कु उडम्बु सरियिल्लै
38.	बस स्टैंड कैसे जाना है?	How to go bus stand	பஸ் ஸ்டேண்டுக்கு எப்படி போகணம்	बस स्टैंड एप्पडि पोगणुम
39.	अमरूद का दाम क्या है?	What is the price of guava	கொய்யா என்ன விலை	कौय्या एन्न विलै
40.	खाना तैयार है क्या?	Is food ready	சாப்படு ரெடியா	साप्पाडु रेडिया
41.	पानी चाहिये	I want water	தண்ணீர் வேணும்	तण्णीर वेणुम
42.	कीरनूर की बस कहां मिलेगी?	Where will I get bus for Kiranur	கீரனூருக்கு பஸ் எங்கே நிற்கும்	कीरनूर बस एनो निक्कुम
43.	दवाई की दुकान कहां है?	Where is the medical shop	மருந்து கடை எங்கே இருக்கு	मरुन्दु कटै एनो इरुक्कु

ये दुनिया अगर मिल भी जाये तो क्या है?

ये खुशियों, ये मस्ती, ये जश्रों की दुनिया
ये कल के साँसों पे प्रश्नों की दुनिया
ये चलती सी फिरती, ये लाशों की दुनिया
ये उम्मीदों में जीते हताशों की दुनिया
ये उन्माद की आगों में जलती सी दुनिया
ये हर मोड़ पर होती गलती की दुनिया
ये दुनिया अगर मिल भी जाये तो क्या है?
ये दुनिया अगर मिल भी जाये तो क्या है?

ये रुकते-सुलगते ख्वाबों की दुनिया
ये जलते से बुझते चराशों की दुनिया
ये बेफ़िक्री में उड़ते मौजों की दुनिया
ये दिमागों में चीखती आवाज़ों की दुनिया
ये नाक सिकोड़ती समाजों की दुनिया
ये सड़कों में जलती चिताओं की दुनिया
ये दुनिया अगर मिल भी जाये तो क्या है?
ये दुनिया अगर मिल भी जाये तो क्या है?

ये चाल चलती सियासतों की दुनिया
ये हसरतों की होती शहादतों की दुनिया
ये कोरी सी काली रातों की दुनिया
ये बेबस, बेज़ार हालातों की दुनिया
ये निरुत्तर कराती सवालियों की दुनिया
ये घुटती-सिसकती मलालों की दुनिया
ये दुनिया अगर मिल भी जाये तो क्या है?
ये दुनिया अगर मिल भी जाये तो क्या है?

ये बेड़ियों से बचती गुनाहों की दुनिया
ये ईमान बेचती सभाओं की दुनिया
ये चमकते-भड़कते लिबासों की दुनिया
और उनमें ही चलते ज़िंदा लाशों की दुनिया
ये गरीबों की फूटी नसीबों की दुनिया
ये फ़सादें कराती ज़मीनों की दुनिया
ये दुनिया अगर मिल भी जाये तो क्या है?
ये दुनिया अगर मिल भी जाये तो क्या है?



सुमित बनर्जी
शोधार्थी



संकलनकर्ता

आर. शंकरन, वित्तीय लेखा परीक्षक और मुख्य लेखा अधिकारी

डॉ. के. इलवळगन, पुस्तकालयाध्यक्ष

कार्यस्थल तनाव के नए आयामः कोविड के परिप्रेक्ष्य में

इक्कीसवीं शताब्दी में जब सभ्यताएं अपने विकास के चरमोत्कर्ष की ओर बढ़ रही थी, जब जीवन के हर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी अपने क्षितिज का विस्तार कर रही थी, सूचना प्रौद्योगिकी 4G से 5G की तरफ कदम बढ़ा रही थी उसी समय इस सदी की सबसे बड़ी महामारी ने दस्तक दी। कोरोना विषाणु ने जीवन के बहुत सारे आयामों को बदल दिया। इन्हीं में से एक कार्यस्थल एवं कार्यशैली के आयाम भी है। कोविड महामारी के बाद कार्यालय की अभिकल्पना पूरी तरह से बदल गयी। कार्यालयों को बंद कर के लोगों ने अपने घरों को कार्यालय के रूप में परिवर्तित कर लिया। इस बदलाव ने एक नये कार्य संस्कृति को जन्म दिया। बहुधा यह कार्य संस्कृति पहले से थी परन्तु यह अनिवार्य नहीं बल्कि ऐच्छिक थी। इस नए कार्य संस्कृति के प्रादुर्भाव ने कार्य स्थल से जुड़े नये आयामों का सृजन किया। इन्हीं में एक आयाम तनाव का भी परिलक्षित हुआ। तनाव की प्रचलित अवधारणा यह थी कि तनाव की मूल वजह संसाधनों की कमी एवं कार्यों की अधिकता होती है। यह तनाव मुख्यतः कार्य स्थल पर होता था तथा यह भी प्रचलित मान्यता थी कि अगर व्यक्ति घर से कार्य निष्पादित करे तो तनाव को काफी हद तक कम किया जा सकता है। परन्तु कोविड काल में इसका विपरीत परिणाम भी देखने को मिला। घर से कार्य निष्पादित करने के बावजूद कर्मियों ने ज्यादा तनाव अनुभव किया। यह एक विचारणीय प्रश्न है कि ऐसा क्यों हुआ?

कार्य एवं कार्यस्थल को मूलतः एक निर्जीव परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है। इन्हें अचेतन अवस्था में रखा जाता है। यह एक प्रचलित भ्रान्ति है कि कार्यस्थल एक अचेतन इकाई है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में तो कार्यस्थल एक वृहद् परिवार की तरह है। यहाँ लोग न सिर्फ कार्य करते हैं बल्कि अपने जीवन की कई समस्याओं का सहकर्मियों से बात विचार कर के निदान भी निकालते हैं। भारतीय संस्कृति मूलतः बहुवाद की रही है। व्यक्ति यहाँ कितना भी अंतर्मुखी क्यों न हों, वह कार्यस्थल पर बहिर्मुखी हो ही जाता है। कार्यस्थल की एक सामाजिक संरचना भी होती है। यह व्यक्ति को उसके मानसिक तनाव को दूसरे के साथ साझा करने का एक लघु मंच प्रदान करता है। पश्चिमी देशों में कार्यस्थल का दायरा काफी सिकुड़ा हुआ होता है। वहाँ का सामाजिक परिदृश्य भी मूलतः व्यक्तिगत होता है।

कोविड महामारी ने लोगों को अपने घरों के अन्दर सीमित कर दिया था। कार्यस्थल पर जो एक खुला माहौल होता था, उसकी भरपाई घर के माहौल से नहीं हो सकता था। कार्यस्थल पर तनाव के कारणों की व्याख्या में संसाधनों की कमी की बात मानी जाती थी। परन्तु इस काल में संसाधन बढ़ गये थे। समयभाव की समस्या भी मूलतः समाप्त हो गयी थी। परन्तु इसके बावजूद भी कर्मियों ने तनाव की बात स्वीकार की।

इस परिदृश्य को यदि थोड़ा और वृहतर पैमाने पर देखा जाये तो यह बात भी परिलक्षित होती है कि अगर संसाधनों की अधिकता हो जाये और उनका उचित निष्पादन न हो तो भी यह तनाव को जन्म देता है।

तनाव से जुड़े सभी शोध मुख्यतः इसके मनोवैज्ञानिक आधार को मानते हैं। परन्तु इसका एक आयाम आध्यात्मिकता में भी मिलता है। यह यहाँ उल्लेखित करना अत्यंत ही समीचीन होगा कि भूमंडलीकरण एवं

उदारीकरण के दौर प्रारम्भ होने के पश्चात कार्यस्थलों पर उत्पन्न तनावों के समाधान के लिए पूरे विश्व की रूचि दार्शनिक एवं आध्यात्मिक क्रियाकलापों की ओर बढ़ी है। इस संदर्भ में बौद्ध दर्शन ने लोगों को सर्वाधिक प्रभावित किया है। बौद्ध दर्शन को समझने के क्रम में व्यक्ति स्वयं को तथा विशेषतः अपने मन को समझने का प्रयास करता है। किसी पारलौकिक सत्ता को समझने और समझाने के बजाए यह इस बात पर जोर देता है कि जीवन को कैसे जिया जाये तथा हर किसी के ज़िन्दगी को तनावरहित कैसे बनाया जाये। यह बात माना जाता है कि बौद्ध दर्शन में आध्यात्मिकता की जो अवधारणा है वो किसी धर्म विशेष के लिए नहीं है बल्कि यह जीवन के अर्थ, लक्ष्य एवं सामूहिकता से सम्बंधित है। बौद्ध दर्शन के इसी विशेषता के कारण इसके आध्यात्मिक आयामों को कार्यस्थलों से जोड़ा जा सकता है।

कोविड के दौरान कार्यस्थलों पर तथा कर्मियों में उत्पन्न हुए तनावों की विवेचना करने पर यह बात स्पष्ट होती है कि लोग मुख्यतः अपने स्वास्थ्य को लेकर, लगातार एक ही माहौल में रहने के कारण तथा अपने (एवं लोगों के) भविष्य के प्रति अनिश्चितता के कारण भयंकर तनाव में थे। तनाव की इन परिस्थितियों से निपटने के लिए एक अलग नज़रिए की तथा उसके अनुकूल व्यवहार करने की जरूरत थी। बौद्ध दर्शन तनाव के इन कारणों को समझने तथा समाधान की दिशा में एक नया नज़रिया देता है जिससे तनाव से व्यापक रूप से निपटा जा सकता है। कोविड महामारी के उस तनावपूर्ण काल में लोगों में यह चेतना जागृत करने की जरूरत थी कि ज़िंदगी को वैज्ञानिक तथा तार्किक ढंग से जीना होगा; लोगों (कर्मियों) को अपनी जिम्मेदारियों को सम्यकपूर्वक निर्वहन करना होगा; अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेष्ट रहते हुए उन आदतों को त्यागना होगा जिससे कि उन पर या अन्य लोगों पर दुष्प्रभाव पड़ता हो; महामारी के इस दौर से निकलने के लिए एक दूसरे का सहयोग करना होगा तथा ज़िन्दगी को समग्रता में देखना एवं समझना होगा।

बौद्ध दर्शन में प्रतीत्यसमुत्पाद एक केन्द्रीय सिद्धांत है जिसके अनुसार प्रत्येक विषय का कुछ न कुछ कारण होता है। कोई भी घटना अकारण उपस्थित नहीं हो सकती है। यह सिद्धांत बहुत ही विस्तार से मनुष्य के कर्मों का विवेचन करता है तथा लोगों के दुख के मूल कारणों की खोज करते हुए यह सपष्ट करता है कि अविद्या (Ignorance) तमाम दुखों का मूल कारण है। कोविड के दौरान घर से कार्य करते हुए भी कर्मियों को तनाव हुआ जिसका एक कारण यह भी था कि लोग अपने भविष्य के प्रति अनिश्चितता से भरे थे; अर्थात् उन्हें यह भी पता नहीं था कि इस महामारी का अंत कब होगा और महामारी के अंत के बाद उनका भविष्य क्या होगा।

प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत से अनित्यवाद, जो कि आगे चलकर क्षणिकवाद में परिवर्तित हो जाता है, की स्थापना होती है जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु किसी कारण के अनुसार होती है; कारण के नष्ट हो जाने पर उस वस्तु का भी नाश हो जाता है तथा उसका परिवर्तन दूसरे रूप में हो जाता है। इस प्रकार नित्य एवं स्थाई वस्तु की परिकल्पना उचित नहीं है। कोविड महामारी के दौरान यह सिद्धांत यह समझ बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है कि वे जो परिस्थितियां थी वे भी अस्थायी थी और समय के साथ तमाम समस्यायें समाप्त हो सकती हैं।

वैसे तो बौद्ध दर्शन में निर्वाण प्राप्ति को शांति प्राप्ति का मार्ग बताया गया है और निर्वाण प्राप्ति के लिए यहाँ अष्टांगिक मार्ग का जिक्र है। इस मार्ग के अंतर्गत सम्यक (Right) दृष्टि (Views), सम्यक संकल्प (Resolve), सम्यक वाक् (Speech), सम्यक कर्मान्त (Actions), सम्यक आजीविका (Livelihood), सम्यक व्यायाम (Efforts), सम्यक स्मृति (Mindfulness) तथा सम्यक समाधि (Concentration) आते हैं। इन मार्गों का प्रयोग कोविड के दौरान विभिन्न कारणों से उत्पन्न तनावों से मुक्ति के लिए भी किया जा सकता है।

भविष्य में भी हम इन बातों को ध्यान में रखकर कार्यस्थल तथा वहाँ कार्यरत कर्मियों को तनाव से बचा सकते हैं। बौद्ध दर्शन के मध्यम पथ का अनुसरण करते हुए कार्यस्थलों पर एक ऐसी व्यवस्था बना सकते हैं जिसके अंतर्गत कर्मियों को न तो लगातार कार्यालय से कार्य से करने को कहा जाये और न ही लगातार घर से ही कार्य करने को प्रोत्साहित किया जाये। उन्हें इस बात के लिए भी प्रोत्साहित किया जाये कि वे घर तथा कार्यालय के कार्यों के बीच एक संतुलन बना कर रख सकें। जो भी कार्य किये जाएँ उसे सम्यक दृष्टि अर्थात् उसे समग्रता में समझने के पश्चात करें। दूसरों के प्रति द्वेष तथा हिंसा के विचारों को त्याग कर सहयोग के साथ कार्य करने को सम्यक संकल्प कहा जायेगा। अक्सर तनाव की स्थिति में हमलोग अपने वचन पर नियंत्रण नहीं रख पाते हैं। इससे स्थिति और खराब होती है। इसलिए ऐसे वचन बोलें जिससे कि मन को शांति मिले। आजीविका के लिए ऐसे साधनों का प्रयोग करना चाहिए कि उससे पर्यावरण को कम से कम हानि हो।

सम्यक स्मृति (Right Mindfulness) तनाव को दूर करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। दार्शनिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो इसका अर्थ वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप के संबंध में जागरूक रहने से है। हम समाज में जिन चीजों के पीछे आजीवन लगे रहते हैं उसके संबंध में हम यदि उसकी वास्तविक स्थिति जान लें कि वे क्षणभंगुर हैं तो बहुत सारी समस्याएं ऐसे भी समाप्त हो जाती है। हम सम्यक स्मृति के अभ्यास के दौरान हम अपने विचारों को नियंत्रित करना सीखते हैं, नकरात्मक विचारों से धीरे धीरे मुक्ति पाते हैं और शरीर तथा मन दोनों को शांत करना सीखते हैं। इस अभ्यास के दौरान हम गहरी श्वास लेते हुए अपने मन तथा शरीर के प्रति जागरूकता का भाव बनाये रखते हैं और यह देखते हैं कि हमारा कोई भी कार्य यंत्रवत नहीं होता रहे। सम्यक स्मृति के अभ्यास से हमारा तनाव घटता है, हृदय की धड़कन नियंत्रित होती है, प्रतिरक्षण क्षमता का विकास होता है तथा बेहतर नींद आती है। सम्यक स्मृति यह भी समझाने में सहायक है कि मन की शांति की कीमत पर कोई कार्य नहीं किये जाएँ।

कोविड-19 महामारी के दौरान विभिन्न कारणों से लोगों में जो तनाव उत्पन्न हुए उनसे निपटने के लिए बौद्ध दर्शन और खास कर के सम्यक स्मृति का अभ्यास एक महत्वपूर्ण सहायता प्रदान कर सकता है। सम्यक स्मृति बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वह गुण है जो हमें वर्तमान समय में जीना सिखाती है। हालाँकि भूत व भविष्य की चिंताओं को छोड़कर वर्तमान में रहने की कला स्मृति है, जबकि वर्तमान में सजगता से जीने की कला सम्यक स्मृति है। यह तनाव से मुक्ति का सबसे सटीक तथा आसान तरीका है क्योंकि तनाव या तो भूत की घटनाओं से आता है या भविष्य की अनिश्चितताओं से।



प्रो. अभिषेक तोतावार, संकाय सदस्य
गोपाल कुमार, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय
डॉ. रवि रंजन, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय

गुलदस्ता

1. सरल होना...

सरल होना
क्या सरल है ?
मन चपल है
चित्त चंचल,
अहम् यात्रा
अविरल है
सरल होना क्या सरल है ?

हम सहज ही
मचल जाते,
उलझते, गांठे बनाते,
एक दूजे के लिए
मन में, अहम्
भरता गरल है,
सरल होना क्या सरल है ?

2. मुहानों पर बैठे लोग

वे जो मुहानों पर बैठे होते हैं
क्यों बैठे होते हैं?
मुहाने पर बैठे सभी
अलग अलग यात्रा
कर रहे होते हैं।
भय, विषाद, मजबूरी
तिनकों* की तलाश
कोई समेटने की यात्रा में होता है
कोई समर्पण की कई अवस्थाएं
क्रमशः तय कर रहा होता है

नदी किनारे बैठे लोग
एक ही नदी को नहीं देख रहे होते हैं
अलग अलग भावों में लोग
डूब उतर रहे होते हैं
तितलियाँ जो उड़ रही हैं
रेंगते बच्चों को देख कर दुखी न हों
पंख उगने के पहले बहुत कुछ टूटना होता है
कुछ को प्युपा कुछ को कुछ और भी होना होता है
जैसे बैठे तो सभी एक डिब्बे में हैं
पर सभी अपना अपना सफर
कर रहे होते हैं
वैसे ही,
लोग मुहानों पर बैठे होते हैं

(*डूबते को तिनके का सहारा)

3. गुरु

जीवन का उपवन रहा हरा
कृत्रिम पुष्पों पल्लवों सुसज्जित किन्तु धरा
कुछ थे विचार के बीज
कभी बोये थे आपा धापी में
उनमें भी जीवन कहाँ रहा

देखा मैंने फिर एक बीज रोपा तुमने
खोदा भीतर, सींचा शिक्षा जल से अपने
फूटा अंकुर मैं देख रहा उगता जीवन
सुन पाता मैं अपने भीतर नव स्पंदन

हो सकता वह कल बन जाए वट, संभावित
यदि रहे आपके प्रखर ज्ञान से परिलक्षित



प्रो. अपूर्व खरे
संकाय सदस्य

1. आया सावन हरा भरा

रच डाली मेहंदी हाथ
चित्रित फूलों में फैली
आनन्दमयीजीवन सुषमा
टेढीमेंढी शाखाओं में भासित
भव की विकृत विषमता
आड़ी सीधी रेखायें गुँथ कर
करती हैं ऐसा धमाल
जैसे काल-मछेरे ने
फैलाया हो विषम-जाल
आलेखित गोले कहते हँस-हँस
जीवन एक पहेली है
पूरी रचना कहती है
जीवन-गति अलबेली है
इसकी लाली में देखी
मधुपूरित जीवन की प्याली
दिनदिन मिट कर कहती
होगी एकदिन प्याली खाली
चक्रवत् परिवर्तित जीवन
चुपके से कानों में कहती
शाश्वत सत्य सुनाती है
रचरच प्रतिपल घुलघुल मेहंदी



डॉ. कुसुम गुप्ता
माता, प्रो. प्रशांत गुप्ता, संकाय सदस्य

2. अहं की चिंगारी

अहं की चिंगारी रखी क्यों
अपने इस उजले मन में
काम क्रोध अरु लोभ मोह की
हवा लगी है अब बहने
चिंगारी रखी

अब तो वह अंगार बन गयी
तन-मन लगा दहकते
डरती हूँ प्रभु झुलस न जाये
सपने जो देखे जीवन मे
चिंगारी रखी

अब आगे क्या धूम बनेगा?
प्रबल वाष्प भर जाय न घट में
त्याग-तपस्या की वर्षा कर
कल्मष मन का दूर बहा दे
चिंगारी रखी

जीवन दान दिया तूने तो
जीने की भी कला सिखा दे
तेरे आगे मेरा बस क्या?
अपने दान की लाज बचाले
चिंगारी रखी

कशिश

सिर्फ कशिश ही कशिश बह रही थी उस पल
कहने को तो वो बस एक चेहरा था,
पर कोई हमसे पूछे उसका रंग कितना गहरा था
मुस्कुराहट में लिपटे अल्फाज़ जो गुनगुनाएं
फिजाओं की बाहों में बैठे बस वो उड़ते जाएं
सुर में ना हो मगर सीधे दिल में घर बसाए
थोड़ा धीरे और थोड़ा तेज़ वक्त नज़र आए
उसमें डूबने को हर बार मन दोहराए
वो कशिश बस बहती जाए....
लग रहा था जैसे उस पर हक़ जमा लूं
पर जितना सोचा उससे ज्यादा वो एहसास गहरा था
कहने को तो बस अल्फाज़ थे
कुछ अधूरे मगर उस वक्त के अंदाज़ थे
मीठी-सी स्वाद में थोड़ी-सी बाद में
अंधेरी रात में था तो बस वो चेहरा था
जितना सोचूं उतना सुनहरा था
मुरझाए फूल एक स्पर्श से खिल जाए
हर वक्त एक मंजिल नज़र आए
इतनी खूबसूरती वो बिखेरती जाए
की रात में चंदा भी नूर नज़र आए
बस वो कशिश बहती जाए बि वो कशिश बहती जाए...



चित्रेश शर्मा
पी.जी.पी.एम. 2020-22

ज़िन्दगी

कभी सपने देखने से पहले भी खुश था मैं,
उन दिनों गीतों को बिना सुने भी मदहोश था मैं,
ना प्यार की लाली लिपटी थी, ना सुनहरे गगन की माया,
अकेला भी नहीं था उस पल, ना झूठा बीता कल,
एक उम्मीद-सी ज्वाला थी बस, और कुछ जिज्ञासा का मीठा रस,
शायद खामोश पड़ी जुबा को इतना काफी था, बस अब जीवन की परिभाषा को ढूढ़ना बाकी था,
कलम उठाई और पन्नों को रंगता चला गया,
एक-एक गुजरे पल को मानो जोड़ता बिखेरता चला गया,
अब बस आखरी पन्ना बचा था, और इस पुरानी कलम में थोड़ी स्याही भी थी,
उन चंद लम्हों में समझ आया कि जिसकी खोज में इतना दूर चला आया,
कि मंजिल तो एक बहाना है आखिर सबको एक ही जगह आना है,
इन रास्तों को गले लगाना है, और बस चलते जाना है।



चित्रेश शर्मा
पी.जी.पी.एम. 2020-22

चेतना

एक महिला के रूप में सर्वशक्तिमान भगवान को मानने में हिंदू धर्म अद्वितीय है। 'शाक्त' नाम से एक संपूर्ण पूजा प्रयोग विधि है। इस स्कूल भगवान को एक मां के रूप में, एक निर्माता के रूप में पहचान कर रही है और मान रही है।

मैं दुर्गा सप्तशती, जिसे चंडी पारायण या देवी महात्म्यम के नाम से भी जाना जाता है, का नियमित जाप करता हूँ। यह भारत के कोने-कोने में काफी लोकप्रिय है। आज एक विशेष श्लोक ने मुझे आधुनिक विज्ञान की दिशा में गहरी भावना से प्रभावित किया।

**या देवी सर्व भूतेशु चेतनेत्य भिधीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥**

श्लोक का अर्थ है उस देवी को प्रणाम करना जो हर प्राणी में चेतना है।

आइए समझते हैं कि यह चेतना क्या दर्शाती है। जिसने पहला पेड़ बनाया है, वह अब उन पेड़ों को नहीं बनाता है। पेड़ों के बीज वह स्रोत बनते हैं जहां से ताजे पेड़ उगते रहते हैं। लेकिन सवाल यह है कि बीज को कैसे पता चलता है कि उसे क्या विकसित करना है। आम के बीज से नारियल का पेड़ नहीं बनता, बरगद के बीज से भिंडी का पौधा नहीं बढ़ता, मछली से केला नहीं पैदा होता और मच्छर से दूसरा मच्छर ही पैदा होता है। वे गुणात्मक रूप से श्रेष्ठ या अन्यथा हो सकते हैं, लेकिन वे कुछ और नहीं बनते। बिना असफल हुए, बीज सही पौधे/पेड़ में विकसित होते हैं। हो सकता है कि वे स्वस्थ न हों, लेकिन गलत कभी नहीं।

ऐसा हर प्राणी के साथ होता है। एक शेर से शेर पैदा होता है, कौवे से कौवा पैदा होता है, मुर्गी के अंडे से चूजे और इंसान से इंसान पैदा होता है। दुनिया में मौजूद प्रजातियों की एक भीड़ के साथ, समुद्र और जमीन दोनों में, कई सहस्राब्दियों में इस तरह का अमोघ प्रजनन वास्तव में एक उल्लेखनीय घटना है।

यह कैसे होता है? कौन जाता है और उन छोटे बीजों या शुक्राणुओं या छिद्रों को बताता है; क्या बनना है और क्या पैदा करना है। विज्ञान जवाब देगा कि यह आनुवंशिक छाप है जो इस आवश्यकता का ख्याल रखती है। लेकिन जीवों की इतनी बड़ी आबादी के हर एक प्राणी में बार-बार सही आनुवंशिक छाप कौन डालता है?

यह चेतना ही है, जो प्रत्येक प्राणी में निवास करती है जो इस घटना को नियंत्रित और निर्देशित करती है। एक बीज या शुक्राणु जानता है कि वह क्या है और उसे क्या बनना है। जैसे ही यह अस्तित्व में आता है, यह स्वचालित रूप से, तुरंत चेतना प्राप्त कर लेता है। उपरोक्त श्लोक केवल यह स्पष्ट करता है कि सर्वव्यापी देवत्व, देवी, प्रत्येक प्राणी में निवास करती है और वह वह है जो उनमें से प्रत्येक में चेतना को स्थापित करती है। उस दृष्टि से यह देवत्व ऐसी चेतना की जननी है और इसीलिए देवत्व को स्त्री रूप में निरूपित किया जाता है। वस्तुतः सृष्टि और गुणों से संबंधित अधिकतर शब्द संस्कृत में स्त्रीलिंग में ही निरूपित होते हैं। प्रकृति, विद्या, क्षुधा, तृष्णा, शांति, दया, तृप्ति, माटी, बूढ़ी कुछ ऐसे शब्द हैं जिन्हें सप्तशती स्वयं दिव्य मां की अभिव्यक्ति के रूप में संदर्भित करता है।

यह निर्जीव चीजों में भी देखा जा सकता है। इलेक्ट्रॉन प्रोटॉन की परिक्रमा क्यों करते हैं और अन्यथा नहीं। जो एक परमाणु में बिल्कुल समान संख्या में इलेक्ट्रॉन और प्रोटॉन डालते हैं। 100 डिग्री सेल्सियस तक गर्म करने पर पानी वाष्प में क्यों बदल जाता है? ये चीजें प्रकृति के नियमों को कैसे जानती हैं और उनका लगातार पालन कैसे करती हैं? वहाँ फिर से यह चेतना है जो हर चीज में निवास करती है जो उन्हें उस तरह से चलाती है जिस तरह से उन्हें माना जाता है। कई चीजों के मिश्रण में, एक चुंबक लोहे के कणों की पहचान करता है और वे बदले में चुंबक को पहचानते हैं और उससे जुड़ने के लिए कूद पड़ते हैं।

इस प्रकार, जीवित प्राणी हों या निर्जीव चीजें, उन सभी के अंदर एक चेतना है जो तय करती है कि वे क्या हैं, उन्हें क्या करना चाहिए और क्या बनना चाहिए। चेतना का विषय व्यापक रूप से भिन्न होता है, लेकिन सच्चाई यह है कि चेतना मौजूद है, यह नहीं बदलता है। चेतना सभी अस्तित्व का मूल है।

उपरोक्त का वर्णन करते हुए, मेरे साथ ऐसा हुआ कि ईश्वर मेरे अंदर की आंतरिक चेतना के अलावा और कुछ नहीं है; वह चेतना जो मुझे बताती है कि मैं क्या हूँ और मुझे क्या बनना है। अन्य सभी प्राणियों के विपरीत, इस सत्य को समझने की क्षमता केवल मनुष्यों को ही दी गई है। लेकिन विडंबना यह है कि, जबकि अन्य सभी प्राणी इस सहज चेतना का पालन करते हैं, मनुष्य सत्य को नकारने के लिए विशेष क्षमता का उपयोग करते हैं।

तो अगर मैं समझता हूँ कि जीवन में मेरा लक्ष्य मेरे भीतर चेतना को महसूस करना है, तो देर-सबेर मैं अपने भीतर के देवत्व की प्राप्ति की ओर बढ़ रहा हूँ।

मैं नम्रता से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसा अहसास मुझे जल्द ही मिले।



आर. शंकरन

वित्तीय लेखा परीक्षक और मुख्य लेखा अधिकारी

ईश्वरानुभूति

ईश्वर सृष्टि का सृजनकर्ता, पालक एवं संहारक है। पृथ्वी की प्रभुसत्ता ईश्वराधीन है। परम दयालु परमेश्वर ने जीव कल्याणार्थ चरा-चर में सारी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध की हैं।

ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है। ऐसे प्रभु के दर्शन हेतु एक दार्शनिक ने दिन रात चिन्तन किया, शास्त्र पढ़े, सत्-संग की तथा कई धार्मिक स्थलों का भ्रमण किया। उसे न तो ईश्वर के दर्शन हुए, न चित्त में शान्ति मिली। अंत में निराश होकर उसने अपने शयन कक्ष की दीवार पर लिख दिया “God is nowhere” (ईश्वर कहीं नहीं है)

इतने पर भी उसके अन्तःकरण में ईश्वरानुभूति की लगन लगी रही। ईश्वरीयानुकम्पा से एक दिन शयन से उठते ही उसकी निगाह दीवार पर लिखी पंक्ति पर पड़ी, उसने पढ़ा- God is Now Here (ईश्वर यहाँ है)

पढ़ते ही उसका मन खुशी से नाचने लगा।

तिल में तैल, दूध में घी, पत्थर आग प्रगराया।

करतल लाल रंग दे मेंहदी, “बंशी” बंशीधर धर माया।।



बंशीलाल झँवर

दादाजी, उमेश झँवर, पी.जी.पी.एम. 2021-23

एक सेल्फी प्लिज

आज सबकी जेब में मेरे साथ जिंदगी खूबसूरती से आगे बढ़ रही है।

यह मेरी कहानी है और मेरा नाम कैमरा है। मेरे पहले पिता सर ईस्टमैन कोडक थे। आजकल ज्यादातर घरों ने मुझे अपनी जिंदगी का हिस्सा मान लिया है। मैं सैमसंग और नोकिया जैसी बड़ी कंपनियों द्वारा बनाए गए गैजेट्स में कई रूपों में रहता हूँ। मेरी कोई मृत्यु नहीं है। घर फीके पड़ जाते हैं।

मैं सर्वव्यापी हूँ। कई देशों में रहते हैं, कई घरों में। मैं बहुआयामी हूँ और कई कौशल और दक्षताओं में खुद को सुधारता रहता हूँ। जब मैं अपने घर में आता हूँ जो कि दुनिया की सबसे अच्छी कंपनियों की आर एंड डी लैब है, तो मैं अपने सर्वोत्तम भौतिक गुणों और संभावनाओं की जांच और शोध करता हूँ।

जैसा कि मैंने आपको बताया कि मेरे कई अवतार और अनुप्रयोग हैं। मुझे उनमें से केवल तीन कहानियाँ सुनाने में दिलचस्पी है। एक सार्वजनिक स्थानों पर निगरानी के बारे में है, दूसरा कंपनियों में निगरानी के बारे में है, और फिर मेरा एक युवा लड़की के मोबाइल फोन का हिस्सा है।

कहानी 1

मैं एक मेट्रो स्टेशन में निगरानी उपकरण का हिस्सा था। बीपीओ शिफ्ट में काम करने वाली दीपंकी रात करीब 9 बजे यात्रा करने गई थी। किसी विशेष दिन पर। वह पहले से ही थकी हुई थी और देखो, जब वह लिफ्ट में प्रवेश करने वाली थी, वहाँ एक आदमी इंतज़ार कर रहा था। उसने मास्क पहना हुआ था, जो हमारे कोरोना मास्क से बड़ा था और उसके पास स्टील का पैमाना था। वह उसे मारता-पीटता, उसे अपशब्द कहता और अपशब्द कहता कि वह स्त्री है, अभिमानी, अपने पति की नहीं सुनती और उसका पर्स मांगती है। उसने पर्स देने से मना कर दिया तो उसने उसे बुरी तरह पीटा और वह दर्द से कराह उठी। अंत में, लगभग 5 मीटर में, उसे कुछ खून बह रहा था और फफोले से चोट लगी थी और वह उसका पर्स लेकर चला गया। उस चोर को कम नहीं पता था कि दीपंकी पर इलजां लगाना आसान नहीं है, क्योंकि वह वह एक अच्छी लड़की थी और वह एक बुरा लड़का था। मेरी रिकॉर्डिंग के आधार पर, बैड बॉय को पुलिस ने पकड़ लिया और उसे वापस इन्साफ मिल गया। मैं अपने जीवन में इस प्रकार की कहानियों से खुश हूँ।

कहानी 2

मैं एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में एक उपकरण का हिस्सा था। भारत में, हमें एक MNC में काम करने पर गर्व है, आपका जो भी काम हो या कितना भी कठिन काम हो और यह आपके लिए जीवन को कितना कठिन बना सकता है, आपको एक अच्छा वेतन मिलता है। लोग तनाव में हैं और अधिक काम कर रहे हैं। मैं लोगों को अंदर और बाहर जाते देखता रहता हूँ। वे लंच ब्रेक के लिए जाते हैं, कभी-कभी बाहर। मैं उन्हें काम पर देखता रहता हूँ। प्रबंधक उन्हें मेरे माध्यम से देखते रहते हैं। वे शाम को बहुत खुश होते हैं, जब वे दिन के अंत में घर जाने के लिए तैयार होते हैं। अब, यह सब एक साल से अधिक समय पहले की कहानी है, जब उस कार्यालय में बहुत

से लोग काम करते थे। इस कोविड लहर के बाद, कई लोगों ने घर से काम करना शुरू कर दिया। ऑफिस में काम करने के दौरान अपने बॉस द्वारा निगरानी न किए जाने पर उन्हें बहुत खुश होना चाहिए था। लेकिन देखो, कंप्यूटर में भी मैं हूँ। उन्हें काम करते समय उन्हें चालू रखना होगा। हर समय देखा जाना, चाहे आप काम न करें, शर्मनाक है। मनोज को यह पसंद नहीं है। लेकिन वह क्या कर सकता है? उसे एडजस्ट करना होगा। कितना अच्छा होता अगर सभी प्रबंधक साहब काम के मामले में अपने लोगों पर भरोसा करते।

कहानी 3

नेहा कॉलेज जाती है। उसने अपने पिता से अपना पहला मोबाइल फोन मांगा। उसने उस पर इतना दबाव डाला कि उसे ईएमआई के जरिए इसे खरीदना पड़ा। यह एक महंगा फोन था और नेहा इसे सभी दोस्तों को दिखाना चाहती थी। वे आए दिन तस्वीरें क्लिक करते थे। वे रोज चैट करते थे। दिन में कई बार। उन्होंने इंटरनेट ब्राउज किया। यह इतना दिलचस्प था कि एक से दूसरे तक, खाना पकाने से लेकर सुंदरता तक सब कुछ दिलचस्प था। सबसे खास थी सेल्फी। उनमें से बहुत से फोन में संग्रहीत हैं...। मैं अच्छी तस्वीरें लाने में बहुत मेहनत करता था और मैं कुशल हूँ और इसने नेहा को खुश किया और वह एक खुशहाल जीवन जी रही है। मैं कभी-कभी यह भी कहना चाहता हूँ कि वह मुझे और मोबाइल को इतना पसंद करती है कि वह मां और पिता के साथ ज्यादा बात नहीं करती है जो इसके बारे में थोड़ा दुखी महसूस करते हैं। मैं नेहा को खुश कर रहा हूँ, लेकिन पिता को नहीं, जो वास्तव में मुझे अपनी मेहनत की कमाई से लाए। क्या मैं उसे खुश नहीं कर सकता?

इन तीन कहानियों के बाद, मैं सोच रहा था कि अपराध से बचने के लिए मुझे अच्छे उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। हालाँकि, हमेशा निगरानी में रहना या तस्वीरें क्लिक करने की लत लगना- क्या मैं सही काम कर रहा हूँ? क्या लोग मेरे माध्यम से सही काम कर रहे हैं?

मैं उन्हें क्या दिखा रहा हूँ? क्या यह बाहर की दुनिया को यह दिखाने के बारे में है कि आप क्या हैं। और देखते रहो कि दूसरे क्या हैं...

काश मैं एक ऐसा दर्पण बन पाता जो किसी के अपने गहरे आत्म और आंतरिक सुख को दिखा सके? और जानें कि हम वास्तव में कौन हैं?



प्रो. वी. विजया
संकाय सदस्य



भारतीय प्रबंध संस्थान तिरुचिरापल्ली
Indian Institute of Management Tiruchirappalli
Pudukkottai Main Road, Chinna Sooriyur Village,
Tiruchirappalli - 620 024, Tamil Nadu.

#IIMTrichySangam